P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-IV, ISSUE-II, November-2015
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

अकबरकालीन चित्रित हाथी–घोड़ों के चित्रण में कलात्मक तत्वों का महत्व

श्रुति जैन
शोध छात्रा,
दृश्यकला विभाग,
दी आई. आई. एस. यूनिवर्सिटी,
जयपुर

अमिता राज गोयल
सीनियर सहायक प्राध्यापिका,
दृश्यकला विभाग,
दी आई. आई. एस. यूनिवर्सिटी,
जयपुर

सारांश

भारतीय चित्रकला में मुगल कला का महत्वपूर्ण स्थान रहा है क्योंकि मुगलों ने जो चित्रशैली प्रारंभ की उसने भारतीय कला के इतिहास को परिवर्तित कर दिया था। मुगल शैली से भारत में प्रगति"ाील तत्वों का प्रवे"ा हुआ जिसने भारत को नवीन स्वरूप प्रदान किया। मुगल सम्राट अपने दरबार में कलाकारों को आश्रय और सम्मान दिया करते थे तथा उन्होंने अपनी–अपनी पसंद के अनुसार कला को आगे की ओर अग्रसर किया। बाबर से लेकर शाहजहाँ तक सभी शासकों का प्राकृतिक सौंदर्य एवं प"ाु–पक्षी अंकन विषयों में रूझान रहा था। अकबर काल में भी लगभग सभी प"ाु–पक्षियों का चित्रण हुआ। हाथी–घोड ही अकबर के सबसे खास प"ाु थे क्योंकि अकबर की जीवनचर्या में इनका बहुत सहयोग रहा था। युद्ध क्षेत्र हो, यात्रा भ्रमण या आखेट सभो कार्य हाथी–घोड़े के द्वारा ही करते थे। यही कारण है की मुगल लघु चित्रकला में भी इन प"ाुओं को बहुत महत्व दिया गया था। सम्राटों के बहुत से व्यक्ति चित्र भी घोड़े पर आरूढ़ होकर ही दर्"ाित हैं। ि"ाकार दृ"यों में भी हाथी–घोड़े की मदद से ि"ाकार करते हुए अंकन किया है। इस शोध पत्र में भी हाथी एवं घोड़ों के चित्रांकन का वि"ोष रूप से अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्दः लघु चित्रकला, घोड़े पर आरूढ़, भ्रमण या आखेट, हाथी, घोड़ा।

पस्तावना

कला आंतरिक अनुभूतियों को प्रकट करने की एक भाषा है। जिस तरह लेखन कार्य का मूल तत्व शब्द, वाक्य, विराम चिन्ह आदि तथा संगीत के तत्व ध्वनि, राग, लय, ताल आदि हैं उसी तरह चित्रकला के भी मूल तत्व होते हैं। चित्रसूत्रम् में लिखा है ''रेखा (लकीर या आकार) लिखावट, अलंकार अथवा आभरण और वण (रंग) पदार्थों लाल, पीले, काले, नीले इत्यादि के भेद को किसी चित्रकर्म को करने में आभूषण की तरह समझना चाहिए।''[1] इसी पकार कला के सभी तत्वों के महत्व का समझे बिना चित्रों का आनन्द अधूरा है। एक सामान्य व्यक्ति कला के भौतिक गुणों को ही समझ पाता है परंतु यदि उसे मुख्य तत्वों का भी ज्ञान हो जाए तो ही वह पूर्णतः रसास्वादन कर सकेगा।[2] कला के द्वारा मानव अपने मन के भावों को अभिव्यक्त करता है। प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक काल तक मनुष्य ने कला का साथ नहीं छोडा है। चित्रण हेतु भित्ति, ताड–पत्र, कपडा, कागज, आदि विभिन्न माध्यम रहे हैं। माध्यमों में विभिन्नता हो सकती है परंतु कला के तत्व सदैव समान रहते हैं।

उद्देश्य

1. अकबरकालीन चित्रों का अध्ययन।
2. हाथी–घोड़े के चित्रों में समाहित कलात्मक तत्व का अध्ययन करना।

शोध पद्धति

इस शोध पत्र हेतु द्वितियक सामग्री का प्रयोग किया गया है। सर्वप्रथम विभिन्न पुस्तकालयों तथा संग्रहालयों से अकबरकालीन हाथी तथा घोड़े के दस चित्रों को एकत्र किया गया। इनमें से सर्वश्रेष्ठ चार चित्रों के द्वारा कलात्मक तत्वों का अध्ययन किया गया है। चित्रों में रेखा तथा रूप को स्पष्ट करने हेतु विभिन्न वर्णों का प्रयोग किया है। हरे वर्ण में वक्र रेखा, पीले वर्ण में लंबवत, क्षितिज, कर्णवत तथा कोणीय रेखा, आसमानी वर्ण में गोलाकार, नीले वर्ण में आयताकार तथा लाल वर्ण में त्रिभुजाकार द"ार्या है।

अकबरकालीन हाथी–घोड़े के चित्रों में ''**मजनुं और उसका घोड़ा**'' नामक चित्र में घोड़े को दयनीय स्थिति को प्रदर्"ात करता यह रेखा चित्र बसावन द्वारा बनाया गया है। इसमें मजनूं के लैला से अलग हो जाने के कारण कृ"ाकाय शरीर और गरीबी को द"ार्या है। सभी आकृतियों का पेट अंदर

घुसा हुआ दर्”ाित है। मजनुं के पास पहनने के लिए वस्त्र तक नहीं होने के कारण अपने गुप्तांगों को एक आड़े पत्ते से ढका हुआ है। मजनुं के समान ही उसके पालतु घोड़े और कुत्ते को भी दयनीय स्थिति में चित्रित किया है। आस पास के परिवे”ा में भी सूखे वृक्ष तथा बंजर जमीन को दिखाकर चित्रकार ने बौद्धिकता का परिचय दिया है और नीचे की ओर जाती धूर्त लोमड़ी की तीव्र गति से दोनों मुख्य आकृतियों की धीमी गति का आभास हो रहा है।

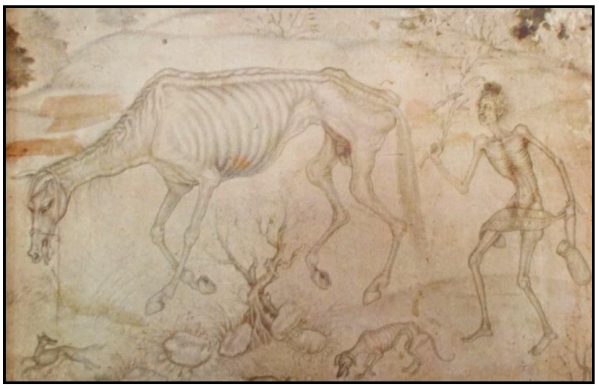

चित्र संख्या– 1 मजनुं और उसका घोड़ा[3]

बसावन ने दृढ़ रेखाओं, लयात्मकता और आकार से चित्र को यर्थाथ रूप दिया है। घोड़े, कुत्ते तथा मजनुं के शरीर की दुर्बलता एवं आंतरिक आंतो को चित्रकार ने वक्र रेखाओं से उभारा है। वहीं पतले हाथ–पैर भी कोणीय रेखा में मुड़े हुए हैं। मजनुं के हाथ में सूखी लंबी झाड़ व घोड़े के मुख–पूंछ को लंबवत रेखा से बनाया गया है। लड़खड़ाने के कारण घोड़े के आगे का एक पैर वक्राकार घूम गया है। मानव तथा प”ाुओं के शरीर की प्रत्येक हड्डियों की बनावट में चित्रकार ने अपनी कला ऊर्जा को द”ार्ाने का प्रयत्न किया है वहीं रेखाओं द्वारा हल्के वर्ण के प्रयोग से छायांकन किया है। पृष्ठभूमि में बहुत कम अंकन करके मुख्य आकृतियों को ही उभारा है।

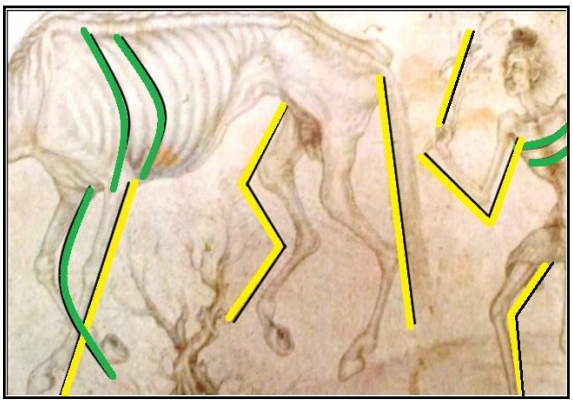

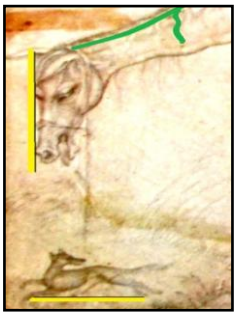

दसवंत और के”ाु द्वारा चित्रित **''अर्जुन द्रौपदी को जीतने के लिए मछली की आंख में निशाना लगाते हुए''** चित्र 'रज़्मनामा' से लिया गया है। इस चित्र में अर्जुन द्वारा पोल पर टंगी मछली को नि”ाना लगा कर गिराते हुए दिखाया है। चित्र के बाहर चौड़े हाि”ाये में अनेक हाथी, घोड़े और संगीतकारों को चित्रित किया है। हाि”ाये और भीतरी दृ”य में कोई संबंध दिखाई नही पड़ता। ऊपर की ओर सिंघासन पर विराजमान देव व उनके समीप गरूड़ पक्षी और फारसी शैली का सिमर्ग भी उड़ते हुए दिख रहे हैं। गरूड़ का शरीर मानवाकार होते हुए भी मुंह, नाखून और पंख पक्षी के हैं। हाि”ाये के दाहिनी ओर बने घोड़ों के बीच तीन हाथियों का अंकन हुआ है। एक हाथी की सूंड़ हाि”ाये से कुछ बाहर निकाली हुई चित्रित है।

चित्र संख्या – 2 अर्जुन द्रौपदी को जीतने के लिए मछली की आंख में निशाना लगाते हुए[4]

चित्रकार ने सभी हाथियों की सूंड़ वक्र रेखाओं द्वारा चित्रित करने का प्रयत्न किया है। हाथी की पीठ पर आयताकार आसन बिछा हुआ है। हाि”ाये के अंत में बाहिनी ओर एक हाथी की सूंड़ चक्राकार है। ऊपर के घोड़ों के पैर वक्र रेखा में और नीचे वाले घोड़ों के लंबवत रेखा में चित्रित है। इनके मुंह त्रिभुजाकार में तथा पूंछ वक्र रेखा में है। घोड़ों में पीला, सफेद, भूरा, काला व नीला रंग प्रयुक्त हुआ है। नीचे दायीं तरफ के एक सफेद घोड़े में काले वर्ण के धब्बों का पोत है। शेष सभी घोड़ों में सपाट वर्ण है। इनकी पीठ पर बिछने वाले आसन विभिन्न

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-IV, ISSUE-II, November-2015
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

आकारों में है। हाथी स्लेटी व दे"ाी नील वर्ण की तानों से रंगित है। हाथी के सिर और कान में गहरी तान तथा शेष स्थान पर हल्की तान प्रयुक्त हुई हैं। फारसी शैली के सिमर्ग की आकृति एक पुंजीय रेखा से बनो है। इसके पंख छोटी–छोटी रेखाओं और बिंदुओं से तैयार किये गये हैं। सभी आकृतियां संयोजन में अधिव्यापित है जो अंतराल के नियम के विरूद्ध चित्रित की गई हैं ताकि अधिक से अधिक अंकन किया जा सके। मात्र ऊपर की ओर बने आका"ा में कुछ अंतराल देखा जा सकता ह।

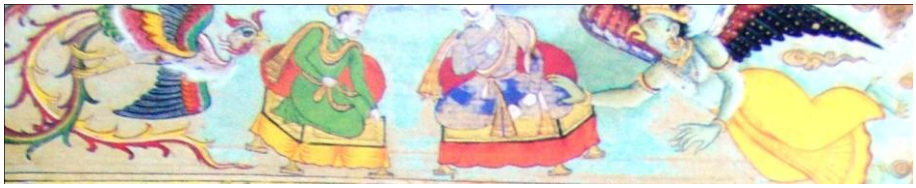

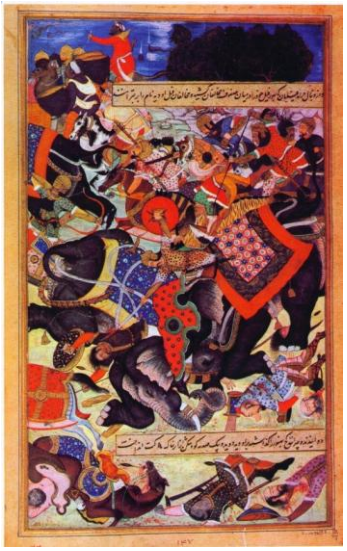

चित्र संख्या– 3 युद्ध में हाथियों का टकराना

अकबरनामा से लिया गया **''युद्ध में हाथियों का टकराना**' नामक चित्र हाथियों की उत्तेजना को द"ार्ाता है। मुगल काल में हाथियों की युद्ध में अहम भुमिका रही है। हाथियों को जंग के मैदान में आवाज़ और खु"बु के आधार पर ही प्रतिक्रिया करना सिखाया जाता था।' चित्र में हाथी बड़ी तीव्रता और जो"ा से आपस में हमला कर रहे हैं। सिर और सूंड़ को इस तरह विकृत चित्रित किया है कि उसे समझ पाना कठिन है। ऐसा प्रतीत होता है की चित्र में आधुनिक युग की विरूपित चित्रकला का प्रभाव है। चित्र की अग्रभुमि में बहादुर खान का घोड़ा तीर लगने के कारण जमीन पर गिर गया है। तीर सीधे उसके मुंह पर लगा है जिसमें रक्त बह रहा है। चित्रकार ने चित्र में जगह–जगह कटे हुए मुंह, रक्त, तीर, तलवार आदि द"ार्ा कर दृ"य की भयावहता को दिखाना चाहा है।

दोनों हाथियों की असुरक्षा व आपसी संघर्ष को कोणीय रेखा में द"ार्ाया गया है। बांये हाथी पर बंधी रस्सी एक पुंजीय रेखा से तथा तलवार–तीरों को कर्णवत रेखा से प्रदर्"ात किया है। हाथिया की सूँड़ सर्पिलाकार और नाखून आयताकार है। संपूर्ण दृ"य गहरे वर्णों में और जमीन हल्के पीले वर्ण की तान में है। जिस घोड़े के मुंह पर तीर लगा है वह वक्रता लिए हुए बायीं ओर दर्"ात है। इसके अतिरिक्त अनेक घोड़े यत्र–तत्र भाग रहे हैं। एक अन्य हाथी चित्रित है जिसका मात्र पिछला हिस्सा ही दिखाई दे रहा है। द्रुत गति में जाने के कारण इसकी पूंछ लहरदार रेखा में है। हाथियों के आसन तथा सेना के वस्त्रों पर भिन्न–भिन्न पोत है। इसके अलावा छोटी–छोटी वक्र रेखाओं से सूंड़ को वास्तविक प्रभाव दिया है। प्रस्तुत चित्र में कहीं भी रिक्त स्थान देखने को नहीं मिलता। सब ओर आकृतियों का छितराव है जो युद्ध के आतंक को द"ार्ाता है।

यह ''शिकारी दृश्य'' नामक चित्र अब्दुस समद द्वारा चित्रित है जिसमें बाज़ का शिकार करते हुए बताया है। चित्र में चार घोड़ों पर घुड़सवार बैठे हैं जिनके हाथ में बाज़ है।[6] एक घुड़सवार घोड़े से उतर कर फड़फड़ाते हुए बाज़ को पकड़ रहा है।

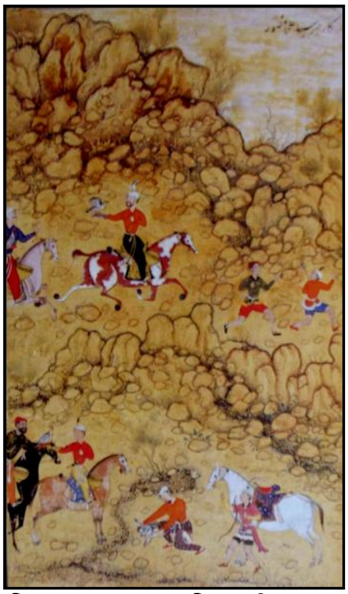

चित्र संख्या– 4 शिकारी दृश्य

घोड़ों का अंकन बहुत बारीक रेखाओं से हुआ है। सभी को एक प्रकार से चित्रित न करके अलग–अलग रूप में चित्रित किया है। ऊपर के दो घोड़ों को दौड़ते हुए चित्रित किया हैं। पहला घोड़ा श्वेत वर्ण का है जिसमें हल्की धुमिल वर्ण की तान प्रयुक्त की है। इसका आधा भाग ही दिखाई दे रहा है।

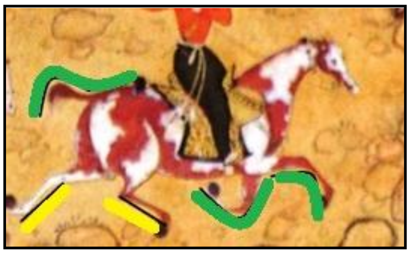

दूसरे श्वेत वर्ण के घोड़े में भूरे वर्ण के धब्बे है। नीचे अग्रभूमि में तीन घोड़े खड़े अंकित हैं। इसमें एक घोड़ा श्याम वर्ण में है जिसका लगभग चौथाई भाग ही दिखाई दे रहा है। अन्य दो घोड़ों में से एक हल्के भूरे तथा एक श्वेत वर्ण में है। ऊपरी घोड़ों में जो तीव्र गति का आभास हो रहा है उसे स्पष्ट करने के लिए पूंछ को हवा में लहराते दिखाया है। पैरों की मुद्रा भी इस प्रकार चित्रित है की वह दौड़ता हुआ दिखाई देता है। आगे के दोनो पैर कुछ वक्रता लिए तथा पीछे के पैर कर्णवत रेखा में निरूपित है। तीव्र गति में होने के कारण हाथ में स्थित बाज के पंख भी उड़ने की मुद्रा में प्रतीत हो रहे हैं। नीचे के दोनों घोड़े एक स्थान पर ही खड़े हुए हैं, इसी कारण उनके पैर व पूंछ लंबवत रेखा से प्रदर्शित हैं। इन घोड़ों में तान का अधिक प्रयोग नहीं करके सपाट रंग में चित्रित किया गया है। मात्र खुरों और घुटनों में गहरी तान दिखाइ पड़ती है। संपूर्ण दृश्य पथरीले पहाड़ पर खुले अंतराल में दर्शित है।

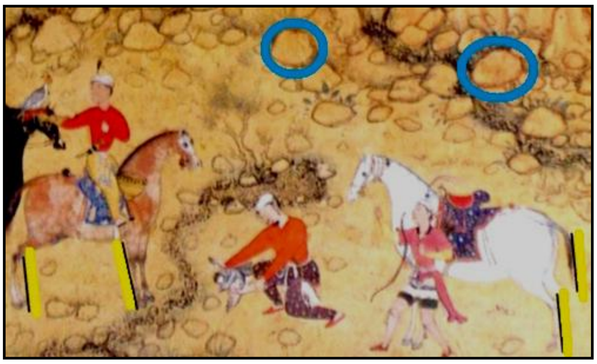

निष्कर्ष

उपरोक्त चित्रों को देखकर स्पष्ट हो जाता है की कला तत्वों के बिना चित्र की कल्पना मात्र भी नहीं की जा सकती है। यद्यपि तत्कालीन चित्रकारों ने उपरोक्त तत्वों पर विचार नहीं किया होगा तथापि उनके चित्रों में इनका समावेश देखा जा सकता है। अकबरकालीन इन लघु चित्रों के उदाहरणों में लंबवत, क्षितिज, वक्र, कर्णवत, लहरदार तथा कोणीय रेखाओं का प्रयोग बारंबार हुआ है। रेखाओं के माध्यम से ही हाथी तथा घोड़े की गति का अभास हो सका है। खड़े रहने की स्थिति में लंबवत रेखा और चलने की मुद्रा में वक्र रेखा का प्रयोग हुआ है साथ ही अधिकांशतः घोड़ों के मुख त्रिभुजाकार तथा हाथियों की सूंड सर्पिलाकार रेखाओं में है। उपरोक्त चित्रों में रेखाओं के अतिरिक्त वर्ण तत्व में गेरू पीले वर्ण का प्रयोग हुआ है। चित्र में कहीं तान का प्रयोग हुआ है तो कहीं सपाट वर्ण दिखाई दिए हैं। घोड़ों की त्वचा पर धब्बेदार पोत और हाथियों की सूंड़ पर रेखाओं की बनावट की गई है। इन सभी विशेषताओं के आधार पर यह कहा जा सकता है की अकबरकालीन लघु चित्रों में सभी चित्रात्मक तत्वों का महत्व रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. द्विवेदी प्रेमशंकर, 'चित्रसूत्रम् (विष्णुधर्मोत्तर पुराण में चित्रकला)', कला प्रकाशन, वाराणसी, द्वितीय संस्करण, 2011, पृष्ठ संख्या– 101

2. शुक्ला राम चंद्र, 'चित्रकला का रसास्वादन', हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1962, पृष्ठ संख्या– 81
3. राय निहाररंजन, 'मुगल कोर्ट पेंटिंग (ए स्टडी इन सो"ाल एंड फॉर्मल एनालेसिस)', इंड़ियन म्यूजियम, कलकत्ता, प्रथम 1975, चित्र संख्या – 4
4. कुमार अ"ोक दास, 'रज़्मनामा (ए बुक ऑफ वार)' कोलकताः मिपिन पब्लि"िंग. चित्र संख्या – 11
5. सेन गीती, 'पेंटिंग्स फ्रॉम अकबरनामा' सस्ट्रे प्रेस प्रा. लि., वाराणसी, 1984, चित्र संख्या – 2
6. दास अ"ोक कुमार, 'मुगल मास्टर्स फर्दर स्टडिज़', मार्ग पब्लिके"ान, मुम्बई, 1998, चित्र संख्या – 1